



Mr. Saurav Sushmita

11 Oct 1993

08:00 PM

Amravati

Model: Baby-Horoscope

Order No: 121932101

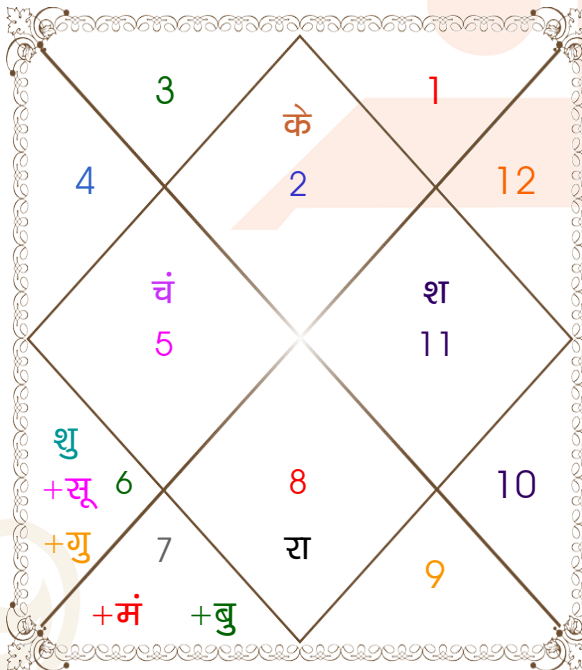
तिथि 11/10/1993 समय 20:00:00 वार सोमवार स्थान Amravati चित्रपक्षीय अयनांश : 23:46:27  
अक्षांश 20:58:00 उत्तर रेखांश 77:50:00 पूर्व मध्य रेखांश 82:30:00 पूर्व स्थानिक संस्कार -00:18:40 घंटे

पंचांग	अवकहड़ा चक्र
साम्पातिक काल : 21:02:05 घं	गण _____: राक्षस
वेलान्तर _____: 00:13:13 घं	योनि _____: मूषक
सूर्योदय _____: 06:12:51 घं	नाडी _____: अन्त्य
सूर्यास्त _____: 17:57:49 घं	वर्ण _____: क्षत्रिय
चैत्रादि संवत _____: 2050	वश्य _____: वनचर
शक संवत _____: 1915	वर्ग _____: मूषक
मास _____: आश्विन	रैजा _____: मध्य
पक्ष _____: कृष्ण	हंसक _____: अग्नि
तिथि _____: 11	जन्म नामाक्षर _____: मा-माणिक
नक्षत्र _____: मघा	पाया(रा.-न.) _____: लौह-रजत
योग _____: शुभ	होरा _____: बुध
करण _____: बव	चौघड़िया _____: रोग

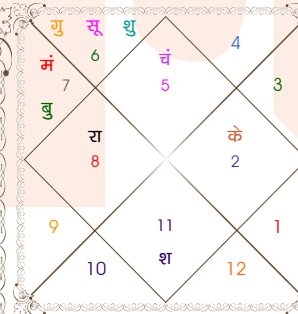
विंशोत्तरी	योगिनी
केतु 6वर्ष 11मा 6दि सूर्य	भद्रिका 4वर्ष 11मा 13दि भामरी
17/09/2020	24/09/2025
17/09/2026	24/09/2029
सूर्य 04/01/2021	भामरी 05/03/2026
चन्द्र 06/07/2021	भद्रिका 24/09/2026
मंगल 11/11/2021	उल्का 26/05/2027
राहु 06/10/2022	सिद्धा 05/03/2028
गुरु 25/07/2023	संकटा 24/01/2029
शनि 06/07/2024	मंगला 05/03/2029
बुध 12/05/2025	पिंगला 25/05/2029
केतु 17/09/2025	धान्या 24/09/2029
शुक्र 17/09/2026	

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			01:43:39	वृष	कृतिका	2	सूर्य	गुरु	---	0:00			
सूर्य			24:30:49	कन्या	चित्रा	1	मंगल	राहु	सम राशि	1.16	अमात्य	पितृ	प्रत्यारि
चंद्र			00:07:35	सिंह	मघा	1	केतु	केतु	मित्र राशि	1.56	ज्ञाति	मातृ	जन्म
मंगल			16:06:42	तुला	स्वाति	3	राहु	शुक्र	सम राशि	1.13	मातृ	भ्रातृ	साधक
बुध			19:14:20	तुला	स्वाति	4	राहु	मंगल	मित्र राशि	1.15	भ्रातृ	ज्ञाति	साधक
गुरु	अ		29:47:49	कन्या	चित्रा	2	मंगल	शनि	शत्रु राशि	0.71	आत्मा	धन	प्रत्यारि
शुक्र			00:46:27	कन्या	उ०फाल्गुनी	2	सूर्य	राहु	नीच राशि	1.06	पुत्र	कलत्र	विपत
शनि	व		00:05:28	कुंभ	धनिष्ठा	3	मंगल	बुध	मूलत्रिकोण	1.48	कलत्र	आयु	प्रत्यारि
राहु	व		10:17:04	वृश्चि	अनुराधा	3	शनि	शुक्र	शत्रु राशि	---	---	ज्ञान	मित्र
केतु	व		10:17:04	वृष	रोहिणी	1	चंद्र	चंद्र	सम राशि	---	---	मोक्ष	क्षेम

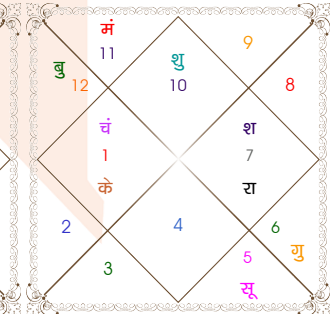
### लग्न-चलित



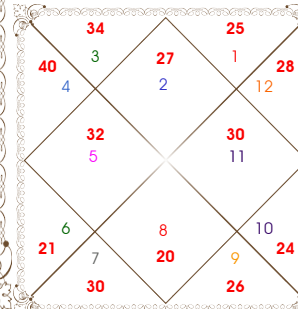
### चन्द्र कुंडली



### नवमांश कुंडली



### सर्वाष्टकवर्ग



### दशमांश कुंडली



## नक्षत्रफल

आपका जन्म मघा नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ है। अतः आपकी जन्म राशि सिंह तथा राशि स्वामी सूर्य हैं। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण क्षत्रिय, नाड़ी अन्त्य, योनि मूषक, वर्ग मूषक तथा गण राक्षस होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपका जन्म नाम "म" अक्षर से प्रारम्भ होगा। यथा महेश, मनोज।

आपका जन्म गण्डमूल नक्षत्र में हुआ है। इसके प्रथम चरण में उत्पन्न होने के कारण जातक माता तथा भ्रातृपक्ष के लिए कष्ट कारी होता है। अतः जन्म समय में ही इस नक्षत्र की शास्त्रीय विधि विधान से किसी योग्य विद्वान द्वारा शान्ति करा लेनी चाहिए। इससे अशुभ प्रभाव समाप्त हो जाएगा। इसके लिए नक्षत्र के कम से कम 28 हजार जप करने चाहिए तथा 28वें दिन जब यह नक्षत्र पुनः आवे तो इसके दशांश का हवन करना चाहिए।

**ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।**

**पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।**

**प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।**

**अक्षन्नपितरो ळमीमवन्तः पितरोडत्प्यन्त पितरः शुन्धध्यम्।।**

**जातक परिजातः**

आप अपने जीवन काल में धन से सदैव परिपूर्ण दौरान आपकी- पास सेवक आपकी सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आप सामाजिक सुख एवं सांसारिक ऐश्वर्य का आनन्द पूर्वक उपभोग करेंगे एवं देवताओं तथा अपने माता पिता के परम प्रिय भक्त होंगे। इसके अतिरिक्त आप एक उद्योगी पुरुष भी होंगे।

**बहुभृत्यः धनो भोगी सुरपितृभक्तो महोद्यमः पित्रे।**

**बृहज्जातकम्**

अर्थात् मघा नक्षत्र में उत्पन्न जातक धनवान, बहुत से नौकरों को रखने वाला, भोगैश्वर्य से सम्पन्न, माता पिता तथा देवताओं का भक्त एवं उद्योगी पुरुष होता है।

आप अपने माता पिता तथा पितामह के प्रति गहन श्रद्धा का भाव रखेंगे। तथा यत्न पूर्वक इनकी सेवा में तल्लीन रहेंगे। आपके अधिकांश कार्य साहसिक होंगे। तथा सेना या पुलिस में किसी उच्च पद को सुशोभित करने में सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही आप सरकार की सेवा के लिए भी योग्य समझे जाएंगे तथा इसका आपको निश्चय ही अवसर प्राप्त होगा।

**बहुभृत्यो धनी भोगी पितृभक्तो महोद्यमी।**

**चमूनाथा राजसेवी मघायां जायते नरः।।**

**मानसागरी**

अर्थात् मघा में उत्पन्न जातक अधिक नौकरों वाला, धनवान, भोगी, पितृभक्त,

महान उद्यमी, सेनापति तथा राजा की सेवा में तत्पर रहता है।

पल पल में आप रूप बदलने में भी अति चतुर होंगे। आप उत्सवों के प्रिय होंगे तथा स्वयं उत्सवों के आयोजनों में पूर्ण रूप से भाग लेकर उसे सफल बनाने में यत्न पूर्वक कर्म करेंगे। आप जनता पर शासन करने वाले उच्चाधिकारी भी हो सकते हैं।

**बहुरूपो धनीभोगी पितृभक्तो महोत्सवी ।  
नरनाथो राजसेवी मघायां जायते नरः । ।  
जातकदीपिका**

अर्थात् मघा में उत्पन्न जातक बहुरूपी, धनवान, ऐश्वर्य सम्पन्न, माता पिता का भक्त महान उत्सवी, मनुष्यों का स्वामी तथा राजा की सेवा करने वाला होता है।

आपके हृदय में दया एवं करुणा के भाव अल्प मात्रा में रहेगा। आपका स्वभाव भी उग्र रहेगा तथा यत्न पूर्वक आप अच्छे कार्यों को ही सश्रमपन्न करेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा स्वबुद्धिबल से समाज में अपना प्रभाव स्थापित करने में सफल रहेंगे। शत्रु को पराजित करना आपके लिए अत्यन्त सुगम कार्य होगा। कभी कभी आप अपने किए हुए कार्यों पर गर्व भी करेंगे। तथा हमेशा पुण्य तथा सत्कार्यों को करने में प्रयत्न शील रहेंगे। आप स्त्री के पूर्ण रूप से वश में रहेंगे एवं समाज में आपको यथोचित मात्रा में पूर्ण मान सम्मान आदर तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

**कठोरचित्तः पितृभक्तियुक्तस्तीव्र स्वभावस्त्वनवद्यविद्यः ।  
चेजन्मभं यस्य मघा नघः सन्मति सदाराति विघातदक्षः । ।  
जातकाभरणम्**

अर्थात् मघा नक्षत्र का जातक कठोर हृदय वाला पिता का भक्त, तीव्र स्वभाव वाला, विद्यावान, पाप रहित, बुद्धिमान एवं शत्रु को जीतने वाला होता है।

आपका जन्म लौहपाद में हुआ है। यद्यपि लौह पाद में उत्पन्न जातक प्रायः धन के अभाव से दुःखी सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार से जीवन में कष्ट प्राप्त करता है। परन्तु आपकी कुण्डली में चन्द्रमा शुभराशि में स्थित है। अतः आप अपने जीवन काल में जल से उत्पन्न होने वाले पदार्थों से नित्य लाभार्जन करते रहेंगे। आप एक धनवान पुरुष होंगे तथा अन्य चल अचल सम्पत्तियों के भी स्वामी बनेंगे। आप हमेशा नवीन वस्त्रों से युक्त रहेंगे एवं जीवन में वाहन आदि के सुख को प्राप्त करेंगे। साथ ही सुयोग्य संतति से भी आप युक्त रहेंगे। देवता एवं ब्राह्मणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा बन्धु एवं मित्रों से आपके संबंध अत्यन्त ही मधुर रहेंगे एवं उनसे आपको यथोचित सहयोग प्राप्त होता रहेगा। जीवन में आवश्यक भौतिक सुखसंसाधनों से आप प्रायः सुसम्पन्न रहेंगे। साथ ही दानशीलता का भाव भी आपके मन में विद्यमान रहेगा। जल क्रीडा के आप शौकीन होंगे तथा इससे हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त करेंगे।

सिंह राशि में उत्पन्न होने के कारण आपका स्वभाव उग्र तथा तेजस्वी होगा। आपका मस्तक तथा मुखमंडल भी विस्तृताकार होगा। आपकी आँखें छोटी तथा पीत वर्ण की होंगी। पहाड़ों तथा जंगलों में भ्रमण करना आपको प्रिय लगेगा। साथ ही आपकी मांस भक्षण में विशेष रुचि हो सकती है। कभी कभी आप अकारण ही क्रोधावस्था को प्राप्त होंगे। जीवन में आप यदा कदा मानसिक चिन्ताओं से भी चिन्तित रहेंगे। आपकी प्रवृत्ति दान शीलता से युक्त होगी। तथा दान देना आपका प्रिय कर्तव्य होगा यदा कदा आप अभिमानी प्रवृत्ति का भी प्रदर्शन करेंगे। आप अपने माता पिता के परम प्रिय भक्त तथा सेवा सुश्रूषा करने वाले व्यक्ति होंगे। साथ ही आपकी सन्तान संख्या में पुत्रों की संख्या अल्प होगी। आपकी बुद्धि स्थिर होगी तथा चंचलता का उसमें सर्वथा अभाव रहेगा।

**तीक्ष्णः स्थूलहनुविशालवदनः पिङ्गक्ष्णोऽल्पात्मजः ।  
स्त्रीद्वेषी प्रियमासकानननग कुप्यत्यकार्यं चिरम् ।।  
क्षुत्क्ष्णोदरदन्तमानसरुजा सम्पीडितस्त्यागवान ।  
विक्रान्तः स्थिरधीः सुगर्वितमनामातुर्विधेयो योऽर्कभे ।।  
बृहज्जातकम्**

आपके शरीर की अस्थियां अत्यन्त ही पुष्ट होंगी तथा बाल भी अल्प मात्रा में ही रहेंगे। स्वभाव से आप उग्र रहेंगे। यदा कदा दन्त रोगों से भी आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। आप कार्यारम्भ से पहले कुछ न कुछ आवाज या स्वर अवश्य निकालेंगे। आपका वक्षस्थल विशाल, विस्तृत तथा दर्शनीय होगा साथ ही समस्त सामाजिक तथा अन्यजन आपके प्रभुत्व को हार्दिक रूप से स्वीकार करेंगे। आप अत्यन्त सजग तथा जागृत रहेंगे तथा कार्य आरम्भ से पहले चारों तरफ स्थितियों का पूर्ण निरीक्षण करेंगे।

**स्थूलास्थिर्मन्दरोमा पृथुवदनगलो ह्रस्वपिङ्गाक्षियुग्मः ।  
स्त्रीद्वेषी क्षुत्पिपासा जठररुदरजपीडितो मांसभक्षः ।।  
दातातीक्ष्णोऽल्पपुत्रो विपिननगरतिमातृवश्य सुवक्षा ।  
विक्रान्तः कार्यालापी शशभृतिरविभे सर्वगम्भीर दृष्टिः ।।  
सारावली**

आपका हनुभाग दृढ तथा मोटा होगा। साथ ही मुख आकृति भी विशालता से युक्त रहेगी। माता के आप परमप्रिय रहेंगे तथा आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान का भाव रखेंगे।

**पिङ्गक्ष्णः स्थूलहनुर्विशालवक्त्रोऽभिमानी सपराकमः ।  
कुप्यत्यकार्यं वनशैलगामी मातुर्विधेयः स्थिरधीः मृगेन्द्रेण ।।  
फलदीपिका**

आप अपने उदर पोषण के योग्य धनार्जन से ही सन्तुष्टि एवं प्रसन्नता की अनुभूति करने वाले होंगे। तथा आपका स्वभाव प्रारम्भ से ही क्रोध युक्त रहेगा। पहाड़ों या जंगलों में भ्रमण के प्रति आपके मन में विशेष उत्सुकता व्याप्त रहेगी। साथ ही आप सेवक तथा बन्धुओं

की संख्या अल्प रहेगी। इसके अतिरिक्त आप विशाल वक्षस्थल के स्वामी होंगे

**उदरभरणतुष्टः कोधनो मांसलुब्धो ।  
गहनगुरुगुहानां सेवको बंधुहीनः । ।  
कपिलनयन भग्नस्तुङ्गवक्षाः क्षुधार्तो ।  
विपुल सुरतसेवी सिंह राशि भे मनुष्यः । ।  
जातकदीपिका**

आप स्वभाव से ही क्षमाशील पुरुष होंगे। तथा दण्ड की अपेक्षा क्षमा करना श्रेयस्कर समझेंगे। आप व्यर्थ समय नष्ट नहीं करेंगे। अपितु कुछ न कुछ कार्य करने में हमेशा तत्पर रहेंगे। आप नित्य देश विदेशों में भ्रमण करने में भी व्यस्त रहेंगे। शीत से आप अधिक भयभीत रहेंगे। आपके सभी मित्र अच्छे तथा गुणवान होंगे। साथ ही सामाजिक जनों से आपका व्यवहार विनयशील रहेगा जिससे सभी लोग आपका सम्मान करेंगे। माता पिता से आपका विशिष्ट अनुराग रहेगा जिसे आप पूर्ण जीवन निर्वाह करेंगे। साथ ही आप में कई व्यसन या बुरी आदतें भी होंगी लेकिन समाज में पूर्ण रूप से प्रख्यात तथा यशस्वी रहेंगे।

यदा कदा आपके द्वारा घर में कुछ न कुछ कलह या वाद विवाद अवश्य होता रहेगा क्योंकि आपकी प्रवृत्ति में उग्रता रहेगी। तथा अन्य जनों की बात से आप शीघ्र ही सहमत भी कम ही होंगे। अतः पारिवारिक तथा सामाजिक जनों से सामंजस्य स्थापित करने के लिए आपको प्रयत्नशील रहना चाहिए।

**अचल काननयानमनोरथं गृहकलित्रच गलोदरपीडनम् ।  
द्विजपतिमृगराजगतो नृणां वितनुते तनुतेजविहीनताम् । ।  
जातकाभरणम्**

आपकी आँखें तथा शारीरिक गठन सुन्दर एवं दर्शनीय होंगे जिसे देखकर कोई भी आकर्षित हो सकेगा। आप गम्भीर दृष्टि वाले पुरुष होंगे तथा गम्भीरता से अवलोकन करने के बाद ही आप कार्याभ्रम करेंगे तथा सम्पूर्ण जीवन को सुख से बिताने में आप सफल सिद्ध होंगे।

**सिंहस्थे पृथुलोचनः सुबदनो गम्भीरदृष्टिः सुखी । ।  
जातक परिजातः**

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आप कभी कभी व्यर्थ बोलने वाले होंगे। आपका हृदय दया तथा करुणा का भाव भी अल्प रहेगा। आपके समस्त कार्य साहस से सम्पन्न होंगे। आपके मन में साहसिक कार्यों को सम्पन्न करने की प्रबल इच्छा सदैव विद्यमान रहेगी। आप छोटी छोटी बातों पर शीघ्र ही क्रोधित हो जाएंगे तथा अपनी कार्य सिद्धि के लिए किसी भी कार्य को करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आपकी प्रवृत्ति वाद विवाद की भी होगी। फलतः अन्य लोगों से आपका वैमनस्य का भाव रहेगा। अतः संयम पूर्वक अन्य लोगों से व्यवहार रखना चाहिए।

आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी पीड़ित हो सकते हैं। साथ ही आपका मुख भी

दीर्घाकार होगा। आप कठोर वचनों का कभी कभी अपने भाषण में प्रयोग करेंगे जिससे सुनने वाले अप्रसन्न रहेंगे। अतः मधुर शब्दों का आपको अपने संभाषण में उपयोग करना चाहिए।

**अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च ।  
दुःशीलवृत्तः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी । ।  
जातकभरणम्**

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

मूषक योनि में उत्पन्न होने के कारण आप एक बुद्धिमान पुरुष होंगे। तथा अपने कार्यों को करने में हमेशा तत्पर रहेंगे। किसी भी कार्य को करने या परिश्रम करने में आप सक्रिय रहेंगे तथा इसमें किसी भी प्रकार का प्रमाद या आलस्य नहीं करेंगे। आप एक सौम्य तथा भद्र पुरुष होंगे तथा अभिमान की भावना का आपमें सर्वथा अभाव रहेगा। फलतः समाज से पूर्ण सम्मान तथा सहयोग प्राप्त होगा। आपके स्वभाव की विशेषता यह होगी कि आप किसी पर भी विश्वास कम ही करेंगे तथा जो भी कार्य अन्य जनों से करवाएंगे उसे अपने समक्ष करवाना पसन्द करेंगे। धनधान्य का आपके पास अभाव नहीं रहेगा तथा हमेशा धन ऐश्वर्य से सम्पूर्ण रहकर जीवन यापन करेंगे।

**बुद्धिमान् वित्तसम्पूर्णः स्वकार्यकरणोद्यतः ।  
अप्रमतोळप्यविश्वासी नरो मूषक योनिजः । ।  
मानसागरी**

अर्थात् मूषक योनि का जातक बुद्धिमान, धनवान, स्वकार्य में तत्पर, गर्वहीन तथा किसी पर भी विश्वास न करने वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति चतुर्थ भाव में होने से माता का शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके प्रति उनका प्रगाढ़ स्नेह रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार की सुख सुविधाएं तथा अन्य सुखों को वे आपको प्रदान करेंगी। आपके मध्य मतभेद अल्प ही रहेंगे अतः परस्पर संबंध मधुर रहेंगे। साथ ही वाहनादि की प्राप्ति में भी वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी तथा कभी भी कोई कठिनाई का सामना नहीं करने देंगी।

आप भी उनका हमेशा हार्दिक सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा एवं निर्देशों को मानने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। साथ ही अपने जीवन काल में उनकी श्रद्धापूर्वक सेवा करेंगे तथा आवश्यक सुखसुविधाओं को भी प्रदान करेंगे। इस प्रकार आपके परस्पर संबंध मधुर एवं सुदृढ़ रहेंगे तथा जीवन को प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति पंचम भाव में है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे एवं उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ होगी। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी यथाशक्ति

सहायता करते रहेंगे। आपकी सन्तति के प्रति भी वे स्नेहशील रहेंगे तथा उनके पालन में अपनी पूर्ण रुचि प्रदर्शित करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी आप करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा आपसी मतभेदों में विभिन्नता होने से संबंधों में कटुता भी आएगी परन्तु कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका पूरा ध्यान रखेंगे एवं उनकी आर्थिक तथा अन्य सहायता करने के लिए भी उद्यत रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल छठे भाव में है अतः भाईयों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा। जीवन में वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों तथा क्षेत्र में आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से आपको किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे। साथ ही शत्रुवर्ग से भी वे आपकी नित्य रक्षा करने में तत्पर रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा एवं हमेशा उनको अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपकी आपसी संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सामान्य रूप से मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में क्षणिक तनाव की स्थिति रहेगी परन्तु कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप सुख दुःख में उनकी वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से भी सहयोग देंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी भलाई करने में तत्पर रहेंगे।

आपके लिए ज्येष्ठमास, तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी तिथियां, मूल नक्षत्र, धृतियोग, बवकरण, शनिवार प्रथम प्रहर तथा मकराशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 मई से 14 जून के मध्य 3,8,13 तिथियाँ मूल नक्षत्र धृति योग तथा बवकरण में कोई भी शुभकार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृह निर्माण कय विक्रय आदि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शनिवार प्रथम प्रहर तथा मकर राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति भी सजग रहें।

यदि आपके लिए समय प्रतिकूल चल रहा हो तथा मानसिक उद्विग्नता, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी प्राप्ति या पदोन्नति में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों अथवा अन्य कार्यों में असफलता प्राप्त हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट सूर्य देव की प्रातः काल उपासना करनी चाहिए तथा अर्घ्य भी प्रदान करना चाहिए साथ ही आपको रविवार का उपावास करना भी श्रेष्ठ रहेगा। इसके अतिरिक्त स्वर्ण, ताम्र, गेहूँ, गुड़, घी, रक्त वस्त्र, रक्त पुष्पादि का श्रद्धा पूर्वक दान करने से भी अशुभ फलों में न्यूनता आएगी तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी। पूर्ण रूप से शुभ कार्यों में सफलता को प्राप्त करने के लिए आपको रवि के तांत्रिय मंत्र के किसी योग्य विद्वान के द्वारा कम से कम 7 हजार जप सम्पन्न करवाने चाहिए। ऐसा करने से आपकी मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता समाप्त होगी। तथा अन्य स्थानों में लाभमार्ग प्रशस्त

होंगे ।

ॐ हां हीं हौं सः सूर्याय नमः ।  
मंत्र- ॐ ऐं ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः ।

